https://archive.org/details/bk907/page/n0/mode/1up

2024 -Dashavatar -Gita Press Gorakhpur (907)

All Items on https://archive.org/details/realpatidar

Full Library on https://realpatidar.com/library

॥ श्रीहरिः ॥

779

दशावतार

realpatidar.com

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/bk907/page/n1/mode/1up

Real Patidar Library

https://www.realpatidar.com/library

This book/literature/article/material may be used for research, teaching, and private study purposes. Any substantial or systematic reproduction, redistribution, reselling, loan, sub-licensing, systematic supply, or distribution in any form to anyone is expressly forbidden.

The library does not give any warranty express or implied or make any representation that the contents will be complete or accurate or up to date. The library shall not be liable for any loss, actions, claims, proceedings, demand, or costs or damages whatsoever or howsoever caused arising directly or indirectly in connection with or arising out of the use of this material.

Full terms and conditions of use: http://www.realpatidar.com

About Real Patidar books

Real Patidar's mission is to organize the information on Satpanth religion, which is a Nizari Ismaili sect of Shia branch of Islam, and to make it universally accessible and useful. Real Patidar Books helps readers discover the material on Satpanth online while helping authors and researchers in their studies. You can know more by visiting http://www.realpatidar.com

You can resize and move this box in any PDF Application like Adobe Acrobat Reader.

No specific pages. See whole book.
References by: RealPatidar.com

https://archive.org/details/bk907/page/n2/mode/1up

2024 -Dashavatar -Gita Press Gorakhpur (907)

॥ श्रीहरिः ॥ **779**

दशावतार

realpatidar.com

GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/bk907/page/n3/mode/1up

मत्स्यावतार

प्राचीन कालमें सत्यव्रत नामके एक राजा थे। वे बड़े ही उदार और भगवान्‌के परम भक्त थे। एक दिन वे कृतमाला नदीमें तर्पण कर रहे थे। उसी समय उनकी अञ्जलिमें एक छोटी-सी मछली आ गयी। उसने अपनी रक्षाकी पुकार की। उस मछलीकी बात सुनकर राजा उसे कमण्डलुमें अपने आश्रमपर ले आये। कमण्डलुमें वह इतनी बढ़ गयी कि पुनः उसे एक बड़े मटकेमें रखना पड़ा। थोड़ी देर बाद वह उससे भी बड़ी हो गयी और मटका छोटा पड़ने लगा। अन्तमें राजा सत्यव्रत हार मानकर उस मछलीको समुद्रमें छोड़ने गये। समुद्रमें डालते समय मत्स्यने राजासे कहा—'राजन्! समुद्रमें बड़े-बड़े मगर आदि रहते हैं। वे मुझे खा जायेंगे। इसलिये मुझे समुद्रमें न छोड़ें।' मछलीकी यह मधुर वाणी सुनकर राजा मोहित हो गये। उन्हें मत्स्यभगवान्‌की लीला समझते देर न लगी। वे हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे।

realpatidar.com

मत्स्यभगवान्‌ने अपने प्यारे भक्त सत्यव्रतसे कहा—'सत्यव्रत! आजसे सातवें दिन तीनों लोक प्रलयकालकी जलराशिमें डूबने लगेंगे। उस समय मेरी प्रेरणासे तुम्हारे पास एक बहुत बड़ी नौका आयेगी। तुम सभी जीवों, पौधों और अन्नादिके बीजोंको लेकर सप्तर्षियोंके साथ उसपर बैठकर विचरण करना। जब तेज आँधी चलनेके कारण नाव डगमगाने लगेगी तब मैं इसी रूपमें आकर तुम लोगोंकी रक्षा करूँगा।' भगवान् राजासे इतना कहकर अन्तर्धान हो गये।

अन्तमें वह समय आ पहुँचा। राजा सत्यव्रतके देखते-ही-देखते सारी पृथ्वी पानीमें डूबने लगी। राजाने भगवान्‌की बात याद की। उन्होंने देखा कि नाव भी आ गयी है। वे बीजोंको लेकर सप्तर्षियोंके साथ तुरन्त नावपर सवार हो गये।

सप्तर्षियोंकी आज्ञासे राजाने भगवान्‌का ध्यान किया। उसी समय उस महान् समुद्रमें मत्स्यके रूपमें भगवान् प्रकट हुए। तत्पश्चात् भगवान्‌ने प्रलयके समुद्रमें विहार करते हुए सत्यव्रतको ज्ञान-भक्तिका उपदेश दिया।

हयग्रीव नामका एक राक्षस था। वह ब्रह्माके मुखसे निकले हुए वेदोंको चुराकर पातालमें छिपा हुआ था। भगवान् मत्स्यने हयग्रीवको मारकर वेदोंका भी उद्धार किया।

समस्त जगत्‌के परम कारण मत्स्यभगवान्‌को हम सब नमस्कार करते हैं।

https://archive.org/details/bk907/page/n4/mode/1up

[779] 1/A

https://archive.org/details/bk907/page/n5/mode/1up

कच्छपावतार

पुराने समयकी बात है—देवताओं और राक्षसोंमें आपसी मतभेदके कारण शत्रुता बढ़ गयी। आये दिन दोनों पक्षोंमें लड़ाई होती रहती थी। एक दिन राक्षसोंके आक्रमणसे सभी देवता भयभीत हो गये। वे भागते-भागते ब्रह्माजीके पास गये। ब्रह्माजीकी रायसे सभी लोग जगद्गुरुकी शरणमें जाकर प्रार्थना करने लगे। देवताओंकी प्रार्थनासे प्रसन्न होकर भगवान्ने कहा—'देवताओ! तुम लोग दानवराज बलिसे प्रेमपूर्वक मिलो। उनको ही अपना नेता मानकर समुद्र मथनेकी तैयारी करो। समुद्र-मन्थनके अन्तमें अमृत निकलेगा। उसे पीकर तुम लोग अमर हो जाओगे।' यह कहकर भगवान् अन्तर्धान हो गये।

realpatidar.com

इसके बाद देवताओंने बलिको नेता मानकर वासुकि नागको रस्सी और मन्दराचलको मथानी बनाकर समुद्र-मन्थन शुरू किया। परन्तु जैसे ही मन्थन शुरू हुआ कि मन्दराचल ही समुद्रमें डूबने लगा। सभी लोग परेशान हो गये। अन्तमें निराश होकर लोगोंने भगवान्का सहारा लिया। भगवान् तो सब जानते ही थे। उन्होंने हँसकर कहा—'सब कार्योंके प्रारम्भमें गणेशजीकी पूजा करनी चाहिये। बिना उनकी पूजाके कार्य सिद्ध नहीं होता।' यह सुनकर वे लोग गणेशजीकी पूजा करने लगे। उधर गणेशजीकी पूजा हो रही थी, इधर लीलाधारी भगवान्ने कच्छपरूप धारणकर मन्दराचलको अपनी पीठपर उठा लिया।

तत्पश्चात् समुद्र-मन्थन शुरू हुआ। मथते-मथते बहुत देर हो गयी। अमृत न निकला। तब भगवान्ने सहस्रबाहु होकर स्वयं ही दोनों तरफसे मथना प्रारम्भ किया। उसी समय हलाहल विष निकला, जिसे पीकर भगवान् शिव नीलकण्ठ कहलाये।

इसी प्रकार कामधेनु, उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभमणि, कल्पवृक्ष, अप्सराएँ, भगवती लक्ष्मी, वारुणी, धनुष, चन्द्रमा, शङ्ख, धन्वन्तरि और अन्तमें अमृत निकला।

अमृतके लिये देवता और दानव दोनों झगड़ने लगे। तब भगवान्ने अपनी लीलासे अमृत देवताओंको ही दिया। अमृत पीकर देवता लोग अमर हो गये। वे युद्धमें विजयी हुए।

विजयी देवता बार-बार कच्छप भगवान्की स्तुति करने लगे। उनकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर भगवान्ने कहा—'देवताओ! जो लोग भगवान्के आश्रित होकर कर्म करते हैं; वे ही देवता कहलाते हैं। उन्हें ही सच्ची सुख-शान्ति और अमृत या अमृत-तत्त्वकी प्राप्ति होती है। किंतु जो अभिमानके सहारे कर्म करते हैं; उन्हें कभी भी अमृतकी प्राप्ति नहीं हो सकती।' यह कहकर भगवान् कच्छप अन्तर्धान हो गये।

realpatidar.com

भक्तोंके परम हितैषी कच्छपभगवान्को हम सब नमस्कार करते हैं।

[779] 1/B

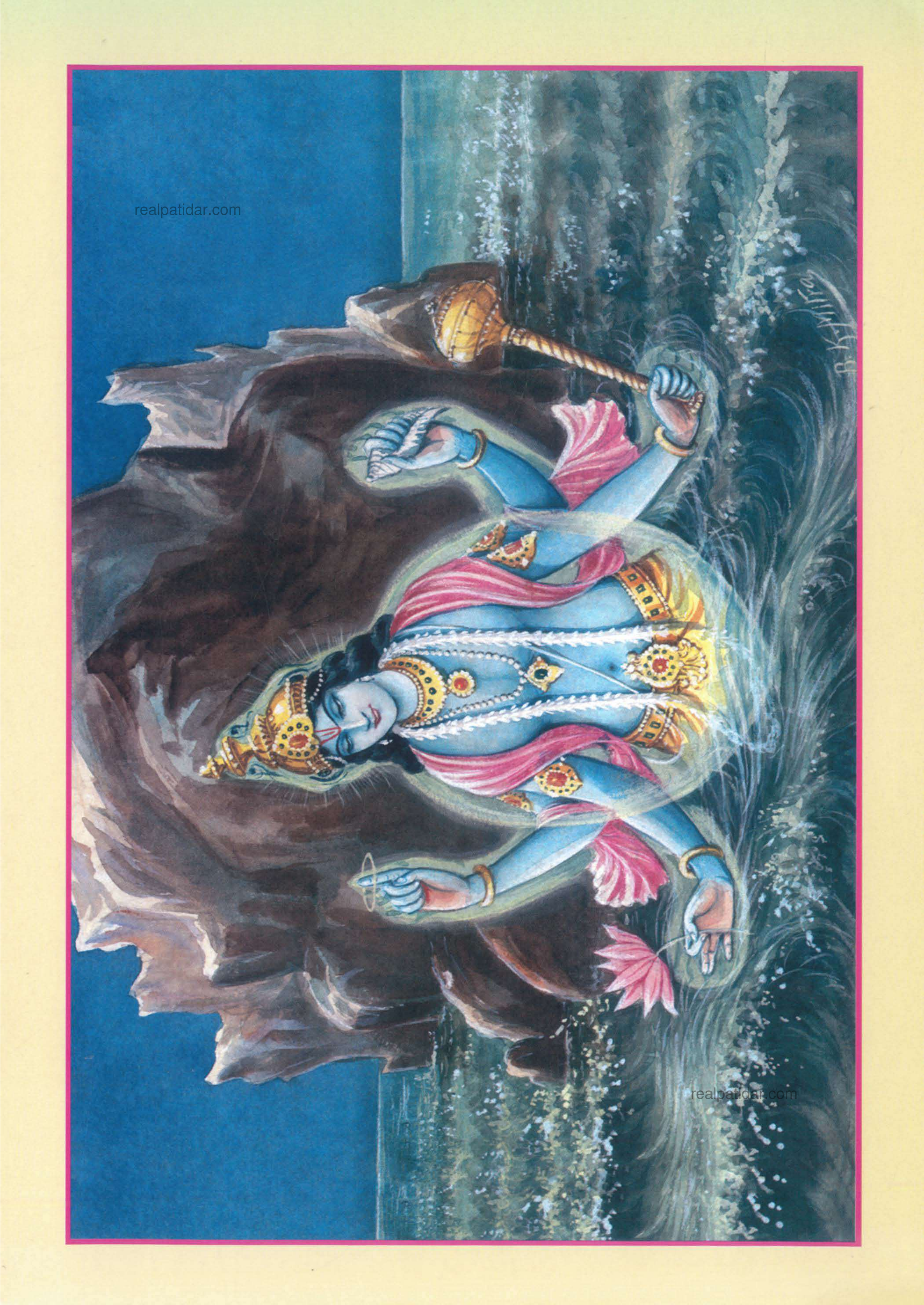

https://archive.org/details/bk907/page/n7/mode/1up

वाराह-अवतार

अनन्त भगवान्‌ने प्रलयके जलमें डूबी हुई पृथ्वीका उद्धार करनेके लिये वराह-शरीर धारण किया। कहा जाता है कि एक दिन स्वायम्भुव मनुने बड़ी नम्रतासे हाथ जोड़कर अपने पिता ब्रह्माजीसे कहा—'पिताजी! एकमात्र आप ही समस्त जीवोंके जन्मदाता हैं। आप ही जीविका प्रदान करनेवाले भी हैं। हम आपको नमस्कार करते हैं। हम ऐसा कौन-सा कर्म करें, जिससे आपकी सेवा बन सके? हमें सेवा करनेकी आज्ञा दीजिये।' मनुकी बात सुनकर ब्रह्माजीने कहा—'पुत्र! तुम्हारा कल्याण हो। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। क्योंकि तुमने मुझसे आज्ञा माँगी है और आत्मसमर्पण किया है। पुत्रोंको अपने पिताकी इसी रूपमें पूजा करनी चाहिये। उन्हें अपने पिताकी आज्ञाका आदरपूर्वक पालन करना चाहिये। तुम धर्मपूर्वक पृथ्वीका पालन करो। यज्ञोंद्वारा श्रीहरिकी आराधना करो। प्रजापालनसे मेरी बड़ी सेवा होगी।' इसपर मनुने कहा—'पूज्यपाद! मैं आपकी आज्ञाका पालन अवश्य करूँगा। किन्तु सब जीवोंका निवासस्थान पृथ्वी इस समय प्रलयके जलमें डूबी हुई है। मैं पृथ्वीका पालन कैसे करूँ?'

पृथ्वीका हाल सुनकर ब्रह्माजी बहुत चिन्तित हुए। वह पृथ्वीके उद्धारकी बात सोच ही रहे थे कि उनकी नाकसे अचानक अँगूठेके आकारका एक वराह-शिशु निकला। देखते-ही-देखते वह पर्वताकार होकर गरजने लगा। ब्रह्माजीको भगवान्‌की माया समझते देर न लगी। भगवान्‌की घुरघुराहट सुनकर वे उनकी स्तुति करने लगे।

ब्रह्माजीकी स्तुतिसे वराहभगवान् प्रसन्न हुए। वे जगत्-कल्याणके लिये जलमें घुस गये। थोड़ी देर बाद वे जलमें डूबी हुई पृथ्वीको अपनी दाढ़ोंपर लेकर रसातलसे ऊपर आये। उनके मार्गमें विघ्न डालनेके लिये महापराक्रमी हिरण्याक्षने जलके भीतर ही उनपर गदासे आक्रमण किया। इससे उनका क्रोध चक्रके समान तीक्ष्ण हो गया। उन्होंने उसे लीलासे ही इस प्रकार मार डाला, जैसे सिंह हाथीको मार डालता है।

जलसे बाहर निकले हुए भगवान्‌को देखकर ब्रह्मा आदि देवता हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे। इससे प्रसन्न होकर वराहभगवान्‌ने अपने खुरोंसे जलको रोककर उसपर पृथ्वीको स्थापित कर दिया।

realpatidar.com

पृथ्वीका उद्धार करनेवाले वराहभगवान्‌को हम सब नमस्कार करते हैं।

https://archive.org/details/bk907/page/n8/mode/1up

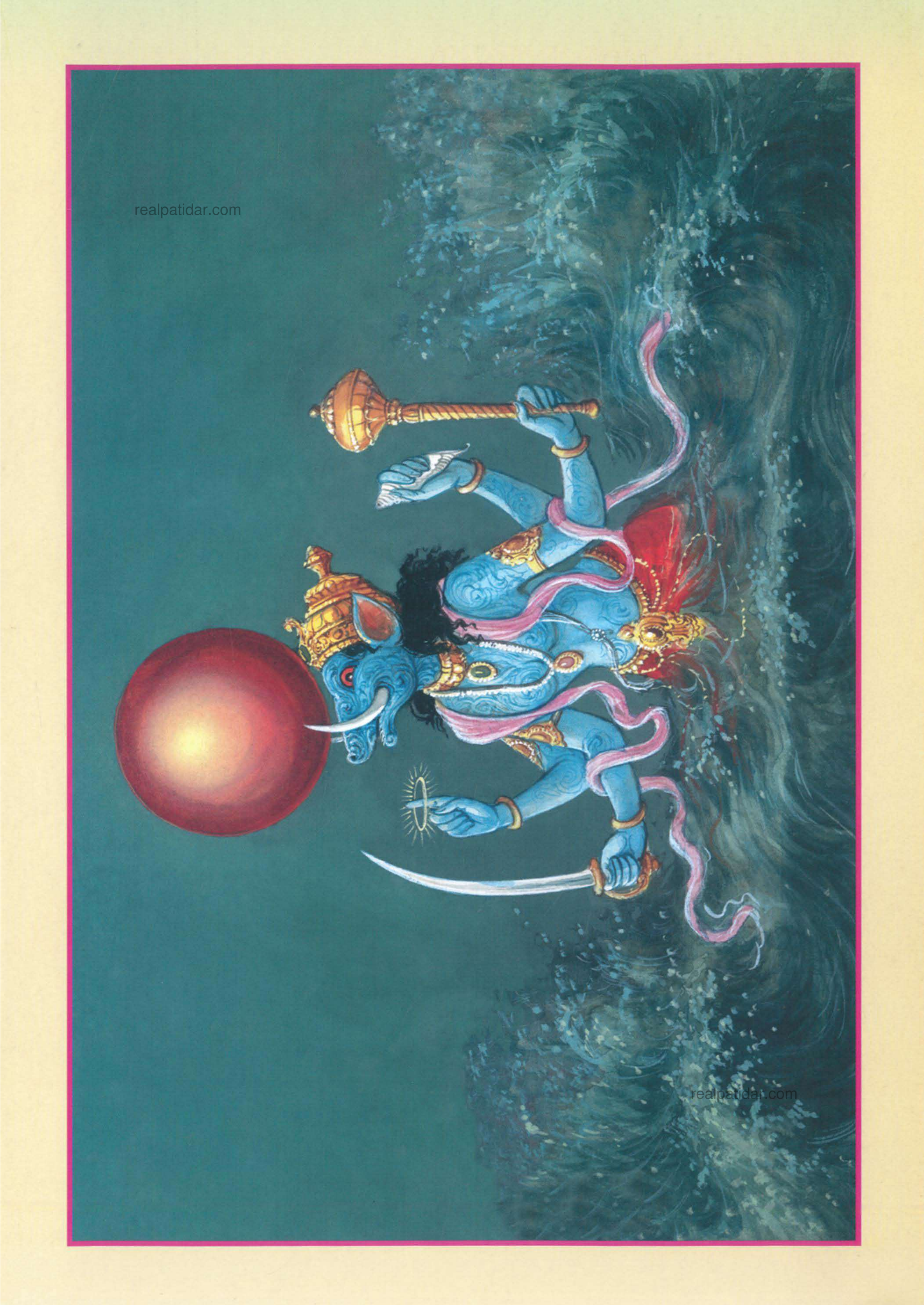

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/bk907/page/n9/mode/1up

नृसिंहावतार

हिरण्याक्षके वधसे उसका भाई हिरण्यकशिपु बहुत दुःखी हुआ। वह भगवान्‌का घोर विरोधी बन गया। उसने अजेय बननेकी भावनासे कठोर तप किया। उसे देवता, मनुष्य या पशु आदिसे न मरनेका वरदान मिला। वरदान पाकर वह अजेय हो गया।

realpatidar.com

हिरण्यकशिपुका शासन इतना कठोर था कि देव-दानव सभी उसके चरणोंकी वन्दना करते रहते थे। भगवान्‌की पूजा करनेवालोंको वह कठोर दण्ड देता था। उसके शासनसे सब लोक और लोकपाल घबराये। जब उन्हें और कोई सहारा न मिला तब वे भगवान्‌की प्रार्थना करने लगे। देवताओंकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर नारायणने हिरण्यकशिपुके वधका आश्वासन दिया।

दैत्यराजका अत्याचार दिनों-दिन बढ़ता ही गया। यहाँतक कि वह अपने ही पुत्र प्रह्लादको भगवान्‌का नाम लेनेके कारण तरह-तरहका कष्ट देने लगा।

प्रह्लाद बचपनसे ही खेल-कूद छोड़कर भगवान्‌के ध्यानमें तन्मय हो जाया करते थे। वे भगवान्‌के परम प्रेमी भक्त थे। वे समय-समयपर असुर-बालकोंको धर्मका उपदेश देते रहते थे।

असुर-बालकोंको उपदेश देनेकी बात सुनकर हिरण्यकशिपु बहुत क्रोधित हुआ। उसने प्रह्लादको दरबारमें बुलाया। प्रह्लादजी बड़ी नम्रतासे हाथ जोड़कर चुपचाप दैत्यराजके सामने खड़े हो गये। उन्हें देखकर दैत्यराजने डाँटते हुए कहा—'मूर्ख! तू बड़ा उद्दण्ड हो गया है। तूने किसके बल-बूतेपर निडरकी तरह मेरी आज्ञाके विरुद्ध काम किया है?' इसपर प्रह्लादने कहा—'पिताजी! ब्रह्मासे लेकर तिनकेतक सब छोटे-बड़े, चर-अचर जीवोंको भगवान्‌ने ही अपने वशमें कर रखा है। वही परमेश्वर ही अपनी शक्तियोंके द्वारा इस विश्वकी रचना, रक्षा और संहार करते हैं। आप अपना यह आसुरभाव छोड़ दीजिये। अपने मनको सबके प्रति उदार बनाइये।'

प्रह्लादकी बातको सुनकर हिरण्यकशिपुका शरीर क्रोधके मारे थर-थर काँपने लगा। उसने प्रह्लादसे कहा—'रे मन्दबुद्धि! तेरे बहकनेकी अब हद हो गयी है। यदि तेरा भगवान् हर जगह है तो बता इस खम्भेमें क्यों नहीं दीखता?'

यह कहकर क्रोधसे तमतमाया हुआ वह स्वयं तलवार लेकर सिंहासनसे कूद पड़ा। उसने बड़े जोरसे उस खम्भेको एक घूँसा मारा। उसी समय उस खम्भेके भीतरसे नृसिंहभगवान् प्रकट हुए। उनका आधा शरीर सिंहका और आधा मनुष्यके रूपमें था। क्षणमात्रमें ही लीलाधारी नृसिंहभगवान्‌ने हिरण्यकशिपुकी जीवन-लीला समाप्त कर दी। अपने प्रिय भक्त प्रह्लादकी रक्षा की।

सर्वव्यापक नृसिंहभगवान्‌को हम सब नमस्कार करते हैं।

https://archive.org/details/bk907/page/n10/mode/1up

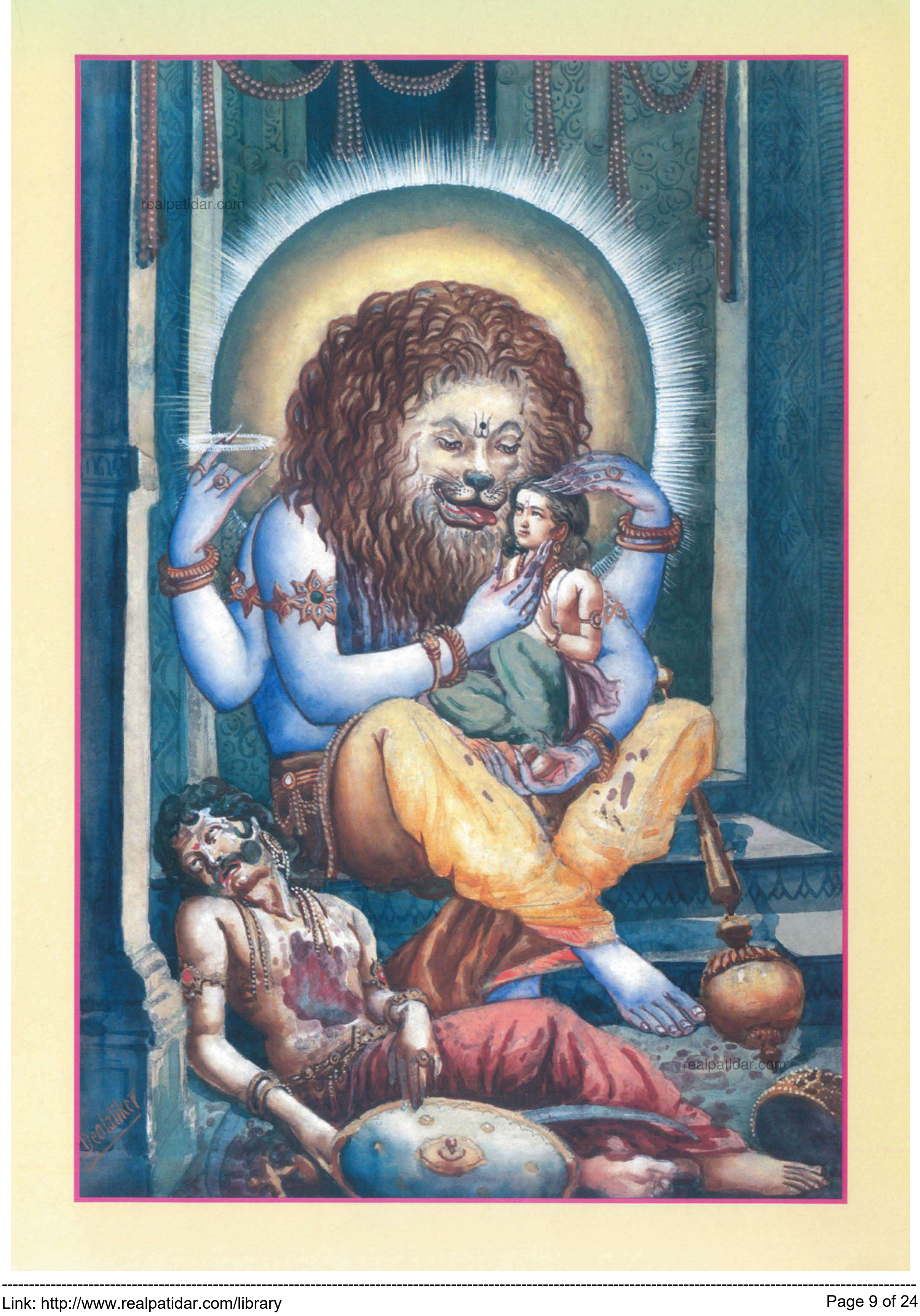

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/bk907/page/n11/mode/1up

वामन-अवतार

एक समयकी बात है—युद्धमें इन्द्रसे हारकर दैत्यराज बलि गुरु शुक्राचार्यकी शरण गये। शुक्राचार्यने उनके अन्दर देवभाव जगाया।

realpatidar.com

कुछ समय बाद गुरुकृपासे बलिने स्वर्गपर अधिकार कर लिया। प्रभुकी महिमा कितनी विचित्र है कि कलका देवराज इन्द्र आज भिखारी हो गया। वह दर-दर भटकने लगा। अन्तमें अपनी माता अदितिकी शरणमें गया। इन्द्रकी दशा देखकर माँका हृदय फटने लगा। अपने पुत्रके दुःखसे दुःखी अदितिने पयोव्रतका अनुष्ठान किया। व्रतके अन्तिम दिन भगवान्ने प्रकट होकर अदितिसे कहा—'देवि! चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे पुत्ररूपमें जन्म लूँगा। इन्द्रका छोटा भाई बनकर उनका कल्याण करूँगा।' यह कहकर वे अन्तर्धान हो गये।

आखिर वह शुभ घड़ी आ ही गयी। अदितिके गर्भसे भगवान्ने वामनके रूपमें अवतार लिया। भगवान्को पुत्ररूपमें पाकर अदितिकी प्रसन्नताका ठिकाना न रहा। भगवान्को वामन ब्रह्मचारीके रूपमें देखकर देवताओं और महर्षियोंको बड़ा आनन्द हुआ। उन लोगोंने कश्यपजीको आगे करके भगवान्का उपनयन आदि संस्कार करवाया।

उसी समय भगवान्ने सुना कि राजा बलि भृगुकच्छ नामक स्थानपर अश्वमेध यज्ञ कर रहे हैं। उन्होंने वहाँके लिये यात्रा की। भगवान् वामन कमरमें मूँजकी मेखला और यज्ञोपवीत धारण किये हुए थे। बगलमें मृगचर्म था। सिरपर जटा थी। इसी प्रकार बौने ब्राह्मणके वेषमें अपनी मायासे ब्रह्मचारी बने हुए भगवान्ने बलिके यज्ञ-मण्डपमें प्रवेश किया। उन्हें देखकर बलिका हृदय गद्गद हो गया। उन्होंने भगवान्को एक उत्तम आसन दिया। बलिने नाना प्रकारसे वामनकी पूजा की।

उसके बाद बलिने प्रभुसे कुछ माँगनेका अनुरोध किया। उन्होंने तीन पग भूमि माँगी। शुक्राचार्य प्रभुकी लीला समझ रहे थे। उन्होंने दान देनेसे बलिको मना किया। बलिने नहीं माना। उसने संकल्प लेनेके लिये जलपात्र उठाया। शुक्राचार्य अपने शिष्यका हित सोचकर पात्रमें प्रवेश कर गये। जल गिरनेका रास्ता रुक गया। भगवान्ने एक कुश उठाकर पात्रके छेदमें डाल दिया। उनकी एक आँख फूट गयी।

संकल्प पूरा होते ही भगवान् वामनने एक पगमें पृथ्वी और दूसरेमें स्वर्ग नाप लिया। तीसरे पगमें बलिने अपने-आपको ही सौंप दिया। बलिके इस समर्पणभावसे भगवान् प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे सुतल लोकका राज्य दे दिया। इन्द्रको स्वर्गका स्वामी बना दिया।

कहा जाता है कि भगवान् वामन द्वारपालके रूपमें राजा बलिको और उपेन्द्रके रूपमें इन्द्रको नित्य दर्शन देते हैं।

realpatidar.com

परम दयालु वामनभगवान्को हम सब नमस्कार करते हैं।

[779] 2/A+B

https://archive.org/details/bk907/page/n13/mode/1up

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

https://archive.org/details/bk907/page/n15/mode/1up

परशुरामावतार

प्राचीन कालकी बात है—पृथ्वीपर हैहयवंशीय क्षत्रिय राजाओंका अत्याचार बढ़ गया था। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। गौ, ब्राह्मण और साधु असुरक्षित हो गये थे। ऐसे समयमें भगवान् स्वयं परशुरामके रूपमें जमदग्नि ऋषिकी पत्नी रेणुकाके गर्भसे अवतरित हुए।

उन दिनों हैहयवंशका राजा सहस्त्रबाहु अर्जुन था। वह बहुत ही अत्याचारी और क्रूर शासक था। एक बार वह जमदग्नि ऋषिके आश्रमपर आया। उसने आश्रमके पेड़-पौधोंको उजाड़ दिया। जाते समय ऋषिकी गाय भी लेकर चला गया। जब परशुरामजीको उसकी दुष्टताका समाचार मिला तब उन्होंने सहस्त्रबाहु अर्जुनको मार डाला। सहस्त्रबाहुके मर जानेपर उसके दस हजार लड़के डरकर भाग गये।

सहस्त्रबाहु अर्जुनके जो लड़के परशुरामजीसे हारकर भाग गये थे, उन्हें अपने पिताके वधकी याद निरन्तर बनी रहती थी। कहीं एक क्षणके लिये भी उन्हें चैन नहीं मिलता था।

एक दिनकी बात है, परशुरामजी अपने भाइयोंके साथ आश्रमके बाहर गये हुए थे। अनुकूल अवसर पाकर सहस्त्रबाहुके लड़के वहाँ आ पहुँचे। उस समय महर्षि जमदग्निको अकेला पाकर उन पापियोंने उन्हें मार डाला। सती रेणुका सिर पीट-पीटकर जोर-जोरसे रोने लगीं।

परशुरामजीने दूरसे ही माताका करुण-क्रन्दन सुन लिया। वे बड़ी शीघ्रतासे आश्रमपर आये। वहाँ आकर देखा कि पिताजी मार डाले गये हैं। उस समय परशुरामजीको बहुत दुःख हुआ। वे क्रोध और शोकके वेगसे अत्यन्त मोहित हो गये। उन्होंने पिताका शरीर तो भाइयोंको सौंप दिया और स्वयं हाथमें फरसा उठाकर क्षत्रियोंका संहार कर डालनेका निश्चय किया।

भगवान्ने देखा कि वर्तमान क्षत्रिय अत्याचारी हो गये हैं। इसलिये उन्होंने अपने पिताके वधको निमित्त बनाकर इक्कीस बार पृथ्वीको क्षत्रियहीन कर दिया। भगवान्ने इस प्रकार भृगुकुलमें अवतार ग्रहण करके पृथ्वीका भार बने राजाओंका बहुत बार वध किया।

तत्पश्चात् भगवान् परशुरामने अपने पिताको जीवित कर दिया। जीवित होकर वे सप्तर्षियोंके मण्डलमें सातवें ऋषि हो गये। अन्तमें भगवान् यज्ञमें सारी पृथ्वी दान कर महेन्द्र पर्वतपर चले गये।

महेन्द्र पर्वतपर विराजमान भगवान् परशुरामजीको हम सब नमस्कार करते हैं।

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/bk907/page/n16/mode/1up

https://archive.org/details/bk907/page/n17/mode/1up

रामावतार

बहुत पुरानी कथा है—श्रीहरिके जय-विजय नामके दो द्वारपाल थे। वे सनकादि ब्रह्मर्षियोंके शापसे घोर निशाचर कुलमें पैदा हुए। उनके नाम रावण और कुम्भकर्ण थे। उनके अत्याचारोंसे पृथ्वी काँप उठी। वह पापके भारको सह न सकी। अन्तमें वह ब्रह्मादि देवताओंके साथ भगवान्की शरणमें गयी। देवताओंकी प्रार्थनासे परब्रह्म परमात्माने अयोध्याके राजा दशरथकी रानी कौसल्याके गर्भसे रामके रूपमें अवतार लिया।

भगवान् श्रीरामने विश्वामित्रके यज्ञमें विघ्न डालनेवाले सुबाहु आदि राक्षसोंको मार डाला। वे सब बड़े-बड़े राक्षसोंकी गिनतीमें थे।

जनकपुरमें सीताजीका स्वयंवर हो रहा था। वहाँ भगवान् शङ्करका विशाल धनुष रखा हुआ था। श्रीरामने उस धनुषको तोड़कर सीताजीको प्राप्त कर लिया।

राजा दशरथकी आज्ञासे श्रीरामका चौदह वर्षका वनवास हुआ। भगवान्ने पिताकी आज्ञा मानकर अपनी पत्नीके साथ वनकी यात्रा की। उनके साथ छोटे भाई लक्ष्मण भी थे।

वनमें पहुँचकर भगवान्ने रावणकी बहिन शूर्पणखाको कुरूप कर दिया। क्योंकि उसकी बुद्धि कामवासनाके कारण अशुद्ध थी। उसके पक्षपाती खर, दूषण, त्रिशिरा आदि प्रधान-प्रधान भाइयोंको श्रीरामने नष्ट कर डाला।

शूर्पणखाकी दशा देखकर रावण बहुत क्रोधित हुआ। उसने भगवान्से शत्रुता ठान ली। छलसे सीताजीका हरण कर लिया। श्रीराम सीताजीके वियोगमें बहुत दुःखी हुए। वे अपनी प्राणप्रिया सीताजीसे बिछुड़कर अपने भाई लक्ष्मणके साथ वन-वन भटकने लगे। भगवान्ने जटायुका दाह-संस्कार किया। फिर कबन्धका संहार किया। सुग्रीव आदि वानरोंसे मित्रता करके बालिका वध किया।

तत्पश्चात् हनुमान्जी सीताकी खोजमें लंका गये। वहाँ सीतासे मिले। उन्होंने राक्षसोंको मारा और लंकाको जला दिया। लौटते समय सीतासे चूड़ामणि लेकर भगवान्से मिले। अन्तमें श्रीराम बंदरोंकी सेनाके साथ समुद्र-तटपर जा पहुँचे।

भगवान् श्रीरामने बंदरों आदिकी सहायतासे समुद्रपर पुल बाँधा। विभीषणकी सलाहसे भगवान्ने नील, सुग्रीव, हनुमान् आदि प्रमुख वीरों और वानरी सेनाके साथ लंकामें प्रवेश किया। दोनों ओरकी सेनाओंमें घमासान युद्ध हुआ। भगवान् राम विजयी हुए। शरणागत विभीषणको लंकाका राजा बनाया।

उसके बाद भगवान् श्रीरामने सीता और लक्ष्मणके साथ अयोध्या लौटकर राम-राज्यकी स्थापना की। भगवान्ने नरलीला करके प्राणिमात्रको प्रेम, नम्रता, सदाचार और माता-पिता-गुरुके प्रति आदर भावका सन्देश दिया।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामको हम सब नमस्कार करते हैं।

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/bk907/page/n18/mode/1up

https://archive.org/details/bk907/page/n19/mode/1up

कृष्णावतार

शूरसेन नामके एक राजा थे। शूरसेनके पुत्र वसुदेव विवाह करके अपनी पत्नी देवकीके साथ घर जानेके लिये रथपर सवार हुए। उग्रसेनका लड़का था कंस। वह अपनी चचेरी बहिन देवकीको प्रसन्न करनेके लिये स्वयं ही रथ हाँकने लगा। जिस समय कंस रथ हाँक रहा था, उस समय आकाशवाणीने उसे सम्बोधित करके कहा—'अरे मूर्ख! जिसको तू रथमें बैठाकर लिये जा रहा है, उसकी आठवें गर्भकी सन्तान तुझे मार डालेगी।' कंस बड़ा पापी था। आकाशवाणी सुनते ही वह देवकीको मारनेके लिये तैयार हो गया। अन्तमें वसुदेवने देवकीके पुत्रोंको उसे सौंपनेका वचन देकर देवकीकी रक्षा की।

तत्पश्चात् कंसने देवकी और वसुदेवको कैद कर लिया। उन दोनोंसे जो-जो पुत्र होते गये, उन्हें वह मारता गया। किंतु भगवान्के विधानको भला कौन रोक सकता है? आखिर वह समय आ ही गया। देवकीके गर्भसे जगत्के तारनहार नारायणने श्रीकृष्णके रूपमें अवतार लिया।

भगवान्के जन्म लेते ही योगमायाकी प्रेरणासे कारागार खुल गया। वसुदेवजी बालकृष्णको सूपमें रखकर गोकुल चल दिये। रास्तेमें यमुनाजी प्रभुका चरण छूनेके लिये व्याकुल हो गयीं। अन्तर्यामी बाल-प्रभु यमुनाके मनकी बात समझ गये। उन्होंने अपने चरण-स्पर्शसे यमुनाकी व्यथाको दूर किया। वसुदेवने नन्दबाबाके घर जाकर अपने पुत्रको यशोदाजीके पास सुला दिया। उनकी नवजात कन्या लेकर वे कारागारमें लौट आये।

बालक श्रीकृष्णको पाकर नन्द और यशोदाकी प्रसन्नताका ठिकाना न रहा। यशोदाको पुत्र हुआ है, यह सुनते ही पूरे गोकुलमें आनन्द छा गया। वहाँ भगवान् अपनी बाललीलासे यशोदाको नित्य रिझाते रहते थे। उनकी वंशीकी धुनपर सभी मोहित हो जाते थे। गोपियोंके घरोंसे माखन चुरानेके कारण वे माखनचोर कहलाये। श्रीकृष्णने बचपनमें ही खेल-खेलमें पूतना, बकासुर, तृणावर्त आदिका विनाश किया। एक उँगलीपर गोवर्धन-पर्वत उठाकर इन्द्रका घमण्ड चूर कर दिया।

एक दिन भगवान् अपनी मित्र-मण्डलीके साथ गेंद खेल रहे थे। गेंद यमुनामें गिर गयी। बालक श्रीकृष्ण गेंद निकालनेके लिये यमुनामें कूद पड़े। यमुनामें कालिय नाग रहता था। भगवान् उसका मान-मर्दनकर उसके फणपर नृत्य करने लगे। इस प्रकार भगवान्ने छोटी अवस्थामें अनेक लीलाएँ कीं।

कुछ समय बाद श्रीकृष्ण अक्रूरके साथ गोकुलसे मथुरा आये। वहाँ उन्होंने अपने परम भक्त सुदामा, माली और कुब्जा आदिपर कृपा की। तदनन्तर भगवान्ने लीलामात्रसे कंस आदि असुरोंका संहार कर अपने माता-पिताको बन्धनसे छुड़ाया। युद्धके मैदानमें अर्जुनको धर्म, कर्म और शाश्वत सत्यका उपदेश दिया। भगवान्का वह अमर संदेश गीताके रूपमें आज भी जन-जनका कल्याण कर रहा है।

लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णको हम सब नमस्कार करते हैं।

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/bk907/page/n20/mode/1up

https://archive.org/details/bk907/page/n21/mode/1up

बुद्धावतार

आजसे लगभग ढाई हजार वर्ष पहले पृथ्वीपर हिंसा बढ़ गयी थी। धर्मके नामपर निर्दोष पशुओंका वध हो रहा था। तब जीवोंकी हत्या रोकनेके लिये मायादेवीके गर्भसे भगवान् स्वयं बुद्धके रूपमें अवतरित हुए। उनके पिताका नाम शुद्धोदन था। उनकी राजधानी कपिलवस्तु थी। भगवान् बुद्धके बचपनका नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थके जन्मके बाद उनकी माताका देहान्त हो गया। सिद्धार्थका पालन-पोषण उनकी विमाता गौतमीदेवीने किया।

realpatidar.com

ज्योतिषियोंने कहा था कि राजकुमार या तो चक्रवर्ती राजा होंगे या विरक्त होकर जगत्का कल्याण करेंगे। महाराज शुद्धोदन ज्योतिषियोंकी इस बातसे चिन्तित रहते थे। उन्होंने राजकुमारके लिये बहुत बड़ा भवन बनवा दिया था। उस भवनमें दुःख, रोग और मृत्युकी कोई बात न पहुँचे—इसकी कड़ी व्यवस्था कर दी थी। राजकुमारका विवाह राजकुमारी यशोधरासे हुआ था। उनके पुत्रका नाम राहुल था।

राजकुमार सिद्धार्थ अत्यन्त दयालु थे। एक बार उन्होंने पितासे नगर देखनेकी आज्ञा माँगी। राज्यकी ओरसे ऐसी व्यवस्था हो गयी कि राजकुमारको नगरमें कोई दुःखद दृश्य न दीख पड़े। लेकिन होनहारको कौन रोक सकता है। नगर घूमते समय एक बूढ़ा आदमी सिद्धार्थको दिखायी पड़ा। इसी प्रकार जब वे दूसरी बार नगर घूमने निकले तो एक रोगी उन्हें मिला। तीसरी बार एक मुर्दा उन्होंने देखा। इन दृश्योंको देखकर संसारके सब सुखोंसे उनका मन हट गया।

संसारके सुखोंसे वैराग्य हो जानेपर अमरताकी खोजका सिद्धार्थने निश्चय कर लिया। एक दिन आधी रातको वे चुपचाप राजभवनसे निकल पड़े। वनमें कठोर तप करने लगे। अन्तमें वे ज्ञान-बोधको प्राप्त करके सिद्धार्थसे भगवान् बुद्ध हो गये।

भगवान् बुद्ध कहते थे—'संसार दुःखमय है। संसारके पदार्थोंको पानेकी तृष्णा ही दुःखका कारण है। तृष्णाका सर्वथा नाश होनेसे दुःखका नाश होता है। राग, द्वेष और अहंकारको छोड़ देनेसे ही जीवकी मुक्ति होती है।' सत्य, नम्रता, सदाचार, सद्विचार, सद्गुण, सद्बुद्धि, ऊँचा लक्ष्य और उत्तम ध्यान—ये आठ साधन भगवान् बुद्धने मनुष्यकी उन्नतिके लिये बताये थे।

इस प्रकार उन्होंने संसारमें घूम-घूमकर मानव-धर्मका खूब प्रचार किया। यज्ञमें पशु-वधको रोका। जीवोंके प्रति प्रेम, अहिंसा और सद्भावका अमर संदेश दिया। आज भी भगवान् बुद्धके उपदेश जन-जनके लिये कल्याणकारी हैं।

realpatidar.com

अहिंसाके अवतार भगवान् बुद्धको हम सब नमस्कार करते हैं।

Deolaliker

https://archive.org/details/bk907/page/n23/mode/1up

कल्कि-अवतार

हमारे धर्मशास्त्रोंमें भगवान् कल्किकी दसवें अवतारके रूपमें चर्चा है। कहा गया है कि ज्यों-ज्यों घोर कलियुग आता जायेगा, त्यों-त्यों दिनों-दिन धर्म, सत्य, पवित्रता, realpatidar.com क्षमा, दया, आयु और बलका लोप होता जायेगा। कलियुगमें जिसके पास धन होगा, उसीको लोग कुलीन, सदाचारी और सद्गुणी मानेंगे। जो जितना छल, कपट कर सकेगा, वह उतना ही व्यवहार-कुशल माना जायेगा। ब्राह्मणकी पहचान उसके गुण-स्वभावसे नहीं यज्ञोपवीतसे हुआ करेगी। जो जितना अधिक दम्भ-पाखण्ड करेगा, उसे उतना ही बड़ा साधु समझा जायेगा। धर्मका सेवन यशके लिये किया जायेगा।

सारी पृथ्वीपर दुष्टोंका बोलबाला हो जायेगा। राजा होनेका कोई नियम न रहेगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्रोंमें जो बली होगा, वही राजा बन बैठेगा। उस समयके नीच राजा अत्यन्त निर्दय एवं क्रूर होंगे। उनसे डरकर प्रजा पहाड़ों और जंगलोंमें भाग जायेगी।

उस समय भयंकर अकाल पड़ जायेगा। लोग भूख-प्यास तथा नाना प्रकारकी चिन्ताओंसे दुःखी रहेंगे। वे पत्तियोंको खाकर पेट भरेंगे। मनुष्य चोरी, हिंसा आदि अनेक प्रकारके कुकर्मोंसे जीविका चलाने लगेंगे।

कलिकालके दोषसे प्राणियोंके शरीर छोटे-छोटे होंगे। चारों वर्णोंके लोग शूद्रोंके समान हो जायेंगे। गौएँ बकरियोंकी तरह छोटी-छोटी और कम दूध देनेवाली हो जायेंगी। वानप्रस्थी और संन्यासी आदि गृहस्थोंकी तरह रहने लगेंगे। लोग धर्मशास्त्रोंकी खिल्ली उड़ायेंगे। वेद-पुराणकी निन्दा करेंगे। पूजा-पाठको सिर्फ ढकोसला मानेंगे। धर्ममें पाखण्डकी प्रधानता हो जायेगी। इस प्रकार कलियुगका अन्त होते-होते पृथ्वीपर हिंसा और जातीय संघर्ष बढ़ जायेगा। तब ऐसी स्थितिमें धर्मकी रक्षा करनेके लिये स्वयं भगवान् अवतार ग्रहण करेंगे।

शास्त्र कहते हैं—कलियुगके अन्तिम दिनोंमें शम्भलग्राममें विष्णुयश नामके एक श्रेष्ठ ब्राह्मण होंगे। उनका हृदय बड़ा उदार होगा। वे भगवान्के परम भक्त होंगे। उन्हींके घर कल्किभगवान् अवतार ग्रहण करेंगे। वे देवदत्त नामक घोड़ेपर सवार होकर दुष्टोंको तलवारके घाट उतारेंगे। वे पृथ्वीपर विलुप्त धर्मकी पुनः स्थापना करेंगे।

भगवान् जब कल्किके रूपमें अवतार ग्रहण करेंगे, उसी समय सत्ययुगका प्रारम्भ हो जायेगा। प्रजा सुख-चैनसे रहने लगेगी।

चराचर जगत्के स्वामी भगवान् कल्किको हम सब नमस्कार करते हैं।

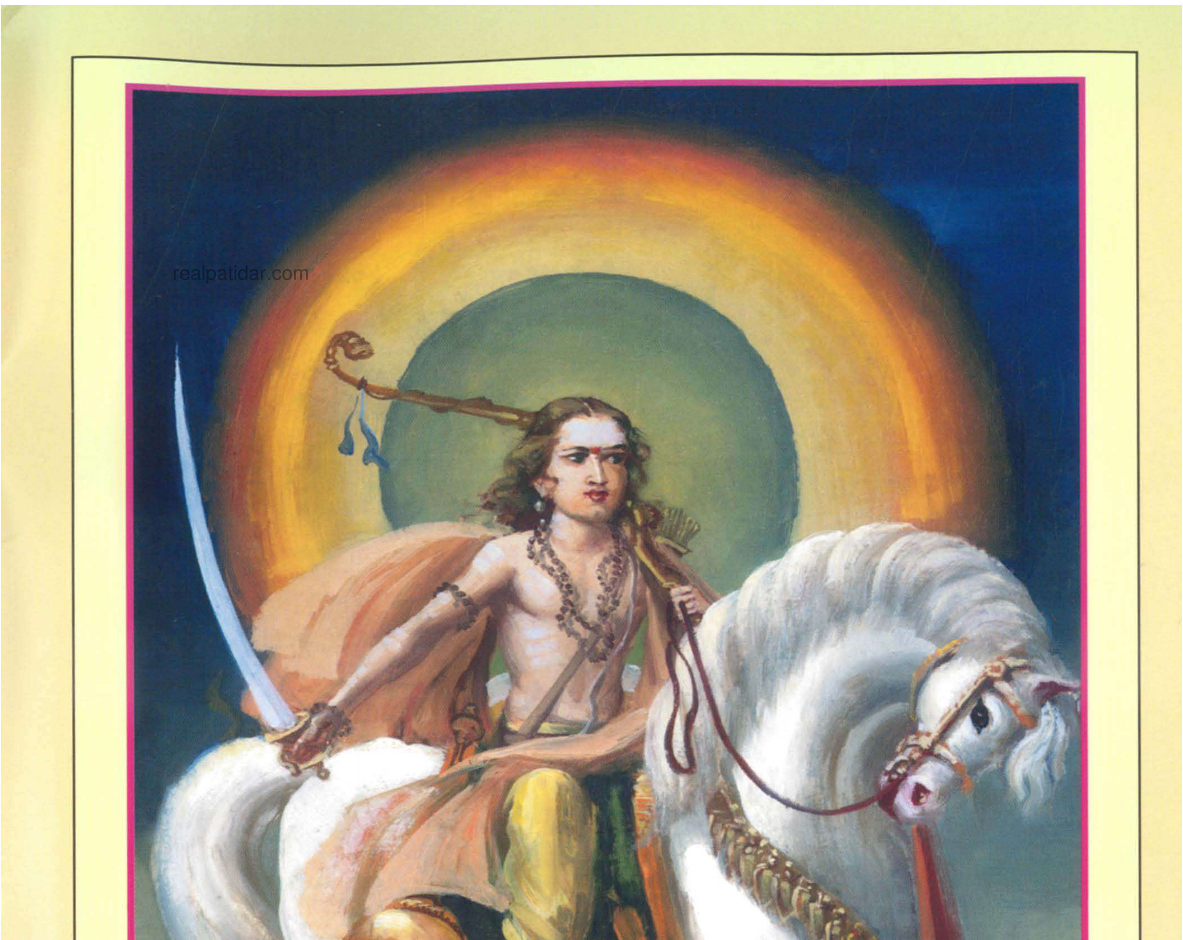
realpatidar.com
realpatidar.com
Deolalikar

https://archive.org/details/bk907/page/n25/mode/1up

2024 -Dashavatar -Gita Press Gorakhpur (907)

नवदुर्गा

यह आदिशक्ति त्रिपुरसुन्दरी पराम्बा दुर्गाके नवों स्वरूपोंका परिचय देनेवाली गीताप्रेससे प्रकाशित अद्भुत पुस्तक है। इसमें भगवती दुर्गाके नवों स्वरूपोंके उद्भव, उपासना-विधि तथा इससे प्राप्त होनेवाले फलोंका अत्यन्त ही रोचक भाषामें वर्णन किया गया है। पुस्तकमें माँ दुर्गाके नवों स्वरूपोंके आकर्षक रंगीन चित्र भी दिये गये हैं। इस पुस्तकके अध्ययन-मनन और चित्रोंके दर्शन-अवलोकनद्वारा भक्त, साधक और सामान्यजन भी भरपूर लाभ उठा सकते हैं।

'ॐ नमः शिवाय'

भगवान् शिवके द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंकी पुराणों तथा अन्य धर्मग्रन्थोंमें अपरम्पार महिमा बतायी गयी है। इन्हें शिवजीका साक्षात् स्वरूप कहा गया है। इनके दर्शन, स्पर्श और पूजनसे भक्तोंको सभी मनोवाञ्छित वर प्राप्त होते हैं। अबतक इनकी उत्पत्ति, स्थापन और माहात्म्यका परिचय देनेवाली कोई स्वतन्त्र पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। इस आवश्यकताकी पूर्तिके लिये 'ॐ नमः शिवाय' नामक पुस्तकका प्रकाशन किया गया है। इसमें कथाके रूपमें सारी बातें सरल भाषामें समझायी गयी हैं। साथ ही प्रत्येक ज्योतिर्लिङ्गके आकर्षक रंगीन चित्र भी दिये गये हैं। इस पुस्तकके अवलोकन-अध्ययनद्वारा भक्त और श्रद्धालुजन भरपूर लाभ उठा सकते हैं।

संवत् २०८० इकतीसवाँ पुनर्मुद्रण ५,०००
कुल मुद्रण ४,३३,५००

❖ मूल्य— ₹ 25
(पचीस रुपये)

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
मो० नं० : +91-8188054403, 8188054408
web : gitapress.org e-mail : booksales@gitapress.org

कूरियर/डाकसे मँगवानेके लिये
गीताप्रेस, गोरखपुर—273005
www.gitapress.org
gitapressbookshop.in

Code 779

realpatidar.com